

"विज्ञान विरोधी" कथा

यह ई-पुस्तक जीएमओ आलोचकों को "विज्ञान-विरोधी" के रूप में लेबल करने के दार्शनिक आधार की जांच करती है, तथा इसकी जड़ें विज्ञानवाद और विज्ञान को दर्शन से मुक्त करने के ऐतिहासिक आंदोलन में खोजती है।

16 दिसंबर 2024 पर मुद्रित



जीएमओ बहस
यूजीनिक्स पर एक आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य

सामग्री तालिका (टीओसी)

1. एक आधुनिक जांच

- 1.1. 🇺🇸 साइंटिफिक अमेरिकन: "आतंकवाद की तरह विज्ञान-विरोध का मुकाबला करें"
- 1.2. 🇵🇭 फिलीपींस के किसानों को "विज्ञान विरोधी लुडाइट्स" के रूप में चित्रित किया गया
- 1.3. 🧑 दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर Justin B. Biddle
- 1.4. 🇷🇺 विज्ञान के लिए गठबंधन: "जीएमओ विरोधी और रूसी ट्रोल विज्ञान के बारे में 'संदेह पैदा करते हैं'"

2. 🤔 दार्शनिक जड़ें

- 2.1. 🧑 दार्शनिक Friedrich Nietzsche विज्ञान द्वारा दर्शन से मुक्ति के प्रयास के बारे में

3. 🤔 विज्ञान का आधिपत्य

- 3.1. 🌱 दार्शनिक Hereandnow
- 3.2. 🤔 दार्शनिक Daniel C. Dennett

4. निष्कर्ष

- 4.1. 🧑 विज्ञान और मूल्यों पर दार्शनिक David Hume

' विज्ञान विरोधी ' आख्यान

एक आधुनिक जांच

हाल के वर्षों में, वैज्ञानिक चर्चा में एक परेशान करने वाली प्रवृत्ति उभरी है: आलोचकों और संशयवादियों को, विशेष रूप से सुजननिकी और जीएमओ पर सवाल उठाने वालों को, “विज्ञान-विरोधी” या “विज्ञान के विरुद्ध युद्ध में शामिल करार दिया जा रहा” है।

यह बयानबाजी, जिसमें अक्सर अभियोजन और दमन के आह्वान शामिल होते हैं, ऐतिहासिक रूप से विधर्म की घोषणाओं से काफी मिलती-जुलती है। यह लेख यह उजागर करेगा कि यह विज्ञान-विरोधी या “विज्ञान पर युद्ध की” कहानी केवल वैज्ञानिक अखंडता का बचाव नहीं है, बल्कि वैज्ञानिकता में निहित मौलिक हठधर्मिता की खामियों और विज्ञान को नैतिक और दार्शनिक बाधाओं से मुक्त करने के सदियों पुराने प्रयास की अभिव्यक्ति है।

आधुनिक इन्क्विजिशन की शारीरिक रचना

किसी व्यक्ति या समूह को “विज्ञान विरोधी” घोषित करना उत्पीड़न का आधार बनता है, जो अतीत की धार्मिक जांचों की याद दिलाता है। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक और सार्वजनिक चर्चा में हाल ही में हुए विकास से प्रमाणित एक गंभीर वास्तविकता है।

2021 में, अंतरराष्ट्रीय विज्ञान प्रतिष्ठान ने एक चिंताजनक मांग की। जैसा कि साइंटिफिक अमेरिकन में बताया गया है, उन्होंने आतंकवाद और परमाणु प्रसार के समान ही विज्ञान-विरोधी को सुरक्षा खतरे के रूप में लड़ने का आह्वान किया:

(2021) एंटीसाइंस मूवमेंट बढ़ रहा है, वैश्विक हो रहा है और हजारों लोगों को मार रहा है

एंटीसाइंस एक प्रमुख और अत्यधिक घातक शक्ति के रूप में उभरा है, और जो आतंकवाद और परमाणु प्रसार के समान ही वैश्विक सुरक्षा के लिए खतरा है। हमें एक जवाबी हमला करना चाहिए और एंटीसाइंस का मुकाबला करने के लिए नए बुनियादी ढांचे का निर्माण करना चाहिए, जैसा कि हमारे पास इन अन्य व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त और स्थापित खतरों के लिए है।

एंटीसाइंस अब एक बड़ा और दुर्जेय सुरक्षा खतरा है।

स्रोत: [Scientific American](#)

यह बयानबाजी महज अकादमिक असहमति से कहीं आगे जाती है। यह हथियार उठाने का आह्वान है, वैज्ञानिक संदेह को वैज्ञानिक प्रक्रिया के स्वाभाविक हिस्से के रूप में नहीं, बल्कि वैश्विक सुरक्षा के लिए खतरे के रूप में पेश करता है।

वास्तविक दुनिया का उदाहरण: फिलीपींस का मामला


फिलीपींस में जीएमओ विरोध का मामला इस बात का एक स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है कि यह कथा व्यवहार में कैसे काम करती है। जब फिलिपिनो किसानों ने जीएमओ गोल्डन राइस के एक परीक्षण क्षेत्र को नष्ट कर दिया, जिसे उनकी सहमति के बिना गुप्त रूप से लगाया गया था, तो उन्हें वैश्विक मीडिया और वैज्ञानिक संगठनों द्वारा “विज्ञान विरोधी लुडाइट्स” के रूप में ब्रांड किया गया। इससे भी अधिक परेशान करने वाली बात यह है कि उन्हें हजारों बच्चों की मौत का दोषी ठहराया गया - एक गहरा आरोप जो, जब “विज्ञान-विरोधी को” आतंकवाद के रूप में लड़ने के आह्वान के संदर्भ में देखा जाता है, तो एक भयावह महत्व प्राप्त करता है।



GOLDEN RICE, NO ENTRY! SHUTDOWN IRRI!

(2024)  फिलीपींस जीएमओ गोल्डन राइस: “विज्ञान विरोधी” जांच का एक उदाहरण

स्रोत: [/philippines/](#)

जीएमओ विरोधियों को “विज्ञान विरोधी” करार देना केवल कुछ घटनाओं तक सीमित नहीं है। जैसा कि दार्शनिक [Justin B. Biddle](#) ने इस विषय पर अपने व्यापक शोध में देखा है, यह कथा विज्ञान पत्रकारिता में व्यापक हो गई है। Biddle, जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में एसोसिएट प्रोफेसर और फिलॉसफी माइनर के निदेशक, विज्ञान विरोधी और “विज्ञान पर युद्ध” कथाओं के अध्ययन में माहिर हैं। उनके काम से पता चलता है कि कैसे इन अवधारणाओं को वैज्ञानिक सहमति के आलोचकों के खिलाफ हथियार बनाया जा रहा है, खासकर  यूजीनिक्स, जीएमओ और अन्य नैतिक रूप से संवेदनशील वैज्ञानिक प्रयासों के आसपास की बहसों में।




(2018) "विज्ञान-विरोधी उत्साह"? मूल्य, महामारी संबंधी जोखिम और जीएमओ बहस

विज्ञान पत्रकारों के बीच "विज्ञान-विरोधी" या "विज्ञान पर युद्ध" कथा लोकप्रिय हो गई है। हालांकि इसमें कोई संदेह नहीं है कि जीएमओ के कुछ विरोधी पक्षपाती हैं या प्रासंगिक तथ्यों से अनभिज्ञ हैं, आलोचकों को विज्ञान विरोधी या विज्ञान पर युद्ध में लगे हुए के रूप में चिह्नित करने की व्यापक प्रवृत्ति पथभ्रष्ट और खतरनाक दोनों है।

स्रोत: [PhilPapers](#) (पीडीएफ बैकअप) | दार्शनिक [Justin B. Biddle](#) (Georgia Institute of Technology)


Biddle चेतावनी देते हैं कि “आलोचकों को विज्ञान विरोधी या विज्ञान के खिलाफ युद्ध में शामिल बनाने की व्यापक प्रवृत्ति **गुमराह करने वाली और खतरनाक दोनों है।**” यह खतरा तब स्पष्ट हो जाता है जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि विज्ञान विरोधी लेबल का इस्तेमाल न केवल तथ्यात्मक असहमति को बल्कि कुछ वैज्ञानिक प्रथाओं के प्रति नैतिक और दार्शनिक आपत्तियों को भी गलत ठहराने के लिए किया जा रहा है।

इस बयानबाजी का एक उदाहरण एलायंस फॉर साइंस से आता है, जिसने एक लेख प्रकाशित किया था जिसमें GMO विरोध की तुलना  रूसी दुष्प्रचार अभियानों से की गई थी:

(2018) जीएमओ विरोधी सक्रियता विज्ञान के बारे में संदेह पैदा करती है

सेंटर फॉर फूड सेफ्टी एंड ऑर्गेनिक कंज्यूमर्स एसोसिएशन जैसे जीएमओ विरोधी समूहों द्वारा सहायता प्राप्त रूसी ट्रोल, सामान्य आबादी में विज्ञान के बारे में संदेह बोलने में आश्चर्यजनक रूप से सफल रहे हैं।

स्रोत: [विज्ञान के लिए गठबंधन](#)

जीएमओ संदेह को “विज्ञान के बारे में ‘संदेह बोलने’ के साथ जोड़ना और रूसी  ट्रोल्ल्स से तुलना करना केवल बयानबाजी नहीं है। यह एक व्यापक आख्यान का हिस्सा है जो वैज्ञानिक संदेह को विज्ञान के खिलाफ आक्रामकता के रूप में पेश करता है। यह रूपरेखा विज्ञान विरोधी आख्यान की अधिक चरम अभिव्यक्तियों में अभियोजन और दमन की तरह के मार्ग को प्रशस्त करती है।

“विज्ञान-विरोधी” कथा की दार्शनिक जड़ें


विज्ञान विरोधी कथा की वास्तविक प्रकृति को समझने के लिए, हमें इसके दार्शनिक आधारों में गहराई से जाना चाहिए। अपने मूल में, यह कथा *वैज्ञानिकता* की अभिव्यक्ति है - यह विश्वास कि वैज्ञानिक ज्ञान ही ज्ञान का एकमात्र वैध रूप है और विज्ञान नैतिक प्रश्नों सहित सभी प्रश्नों का अंतिम निर्णायक हो सकता है और होना भी चाहिए।

इस विश्वास की जड़ें “*विज्ञान मुक्ति*” आंदोलन में हैं, जो विज्ञान को दार्शनिक और नैतिक बाधाओं से मुक्त करने का सदियों पुराना प्रयास है। जैसा कि दार्शनिक **Friedrich Nietzsche** ने 1886 में बियोन्ड गुड एंड एविल (अध्याय 6 - वी स्कॉलर्स) में देखा था:

वैज्ञानिक व्यक्ति की स्वतंत्रता की घोषणा, **दर्शन से उसकी मुक्ति**, लोकतांत्रिक संगठन और अव्यवस्था के सूक्ष्मतरंग परिणामों में से एक है: विद्वान व्यक्ति का आत्म-महिमामंडन और आत्म-दंभ अब हर जगह पूरी तरह से खिल रहा है, और इसके सर्वोत्तम वसंत ऋतु - जिसका अर्थ यह नहीं है कि इस मामले में आत्म-प्रशंसा से मीठी गंध आती है। यहां भी जनता की प्रवृत्ति चिल्लाती है, **“सभी स्वामियों से मुक्ति!”** और विज्ञान ने, सबसे सुखद परिणामों के साथ, धर्मशास्त्र का विरोध किया है, जिसकी “हाथ की नौकरानी” यह बहुत लंबे समय से थी, **अब यह दर्शन के लिए कानून बनाने और अपनी बारी में “मास्टर” की भूमिका निभाने के लिए अपनी लापरवाही और अविवेक का प्रस्ताव करता है। - मैं क्या कह रहा हूँ! अपने स्वयं के खाते पर दार्शनिक की भूमिका निभाने के लिए।**



वैज्ञानिक स्वायत्तता की चाहत एक विरोधाभास पैदा करती है: वास्तव में अकेले खड़े होने के लिए, विज्ञान को अपनी मौलिक मान्यताओं में एक तरह की दार्शनिक ‘निश्चितता की’ आवश्यकता होती है। यह निश्चितता *एकरूपतावाद* में एक हठधर्मी विश्वास द्वारा प्रदान की जाती है - यह विचार कि वैज्ञानिक तथ्य दर्शन के बिना मान्य हैं, मन और ∞ समय से स्वतंत्र हैं।

यह हठधर्मी विश्वास विज्ञान को एक तरह की नैतिक तटस्थता का दावा करने की अनुमति देता है, जैसा कि आम धारणा से स्पष्ट है कि “*विज्ञान नैतिक रूप से तटस्थ है, इसलिए इस पर कोई भी नैतिक निर्णय केवल वैज्ञानिक निरक्षरता को दर्शाता है*”। हालाँकि, तटस्थता का यह दावा अपने आप में एक दार्शनिक स्थिति है, और जब इसे **मूल्य** और  नैतिकता के प्रश्नों पर लागू किया जाता है तो यह बहुत समस्याग्रस्त हो जाता है।


(2018) अनैतिक उन्नति: क्या विज्ञान नियंत्रण से बाहर है?

अधिकांश वैज्ञानिकों के लिए, उनके काम पर नैतिक आपत्तियाँ मान्य नहीं हैं: विज्ञान, परिभाषा के अनुसार, नैतिक रूप से तटस्थ है, इसलिए इस पर कोई भी नैतिक निर्णय केवल वैज्ञानिक निरक्षरता को दर्शाता है।

स्रोत: [New Scientist](#)




वैज्ञानिक आधिपत्य का खतरा

इस वैज्ञानिक आधिपत्य के खतरे को एक लोकप्रिय दर्शन मंच चर्चा में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है, जिसे  GMODebate.org पर ई-बुक के रूप में प्रकाशित किया गया है:



(2024) “विज्ञान के बेतुके आधिपत्य पर”

एक अंतहीन किताब... हाल के इतिहास में सबसे लोकप्रिय दर्शन चर्चाओं में से एक।
स्रोत:  GMODebate.org

मंच चर्चा के लेखक,  Hereandnow, तर्क देते हैं:

वास्तविक शुद्ध विज्ञान एक अमूर्तन है... वह समग्रता जिससे यह अमूर्तित है, वह सब कुछ है, एक संसार है, और यह संसार अपने सार में, अर्थों से भरा हुआ, गणना से परे, सूक्ष्मदर्शी की शक्तियों के लिए भी दुर्गम है।



...जब विज्ञान यह “बताने” के लिए कदम उठाता है कि दुनिया क्या है, तो यह केवल अपने क्षेत्र के दायरे में ही सही है। लेकिन दर्शन, जो सबसे खुला क्षेत्र है, को ‘विज्ञान’ या राजमिस्त्री को बुनने से ज़्यादा इस पर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं है। दर्शन सभी को शामिल करने वाला सिद्धांत है, और ऐसी चीज़ को वैज्ञानिक प्रतिमान में फिट करने का प्रयास सिर्फ़ विकृत है।

विज्ञान: अपनी जगह जानो! यह दर्शन नहीं है।

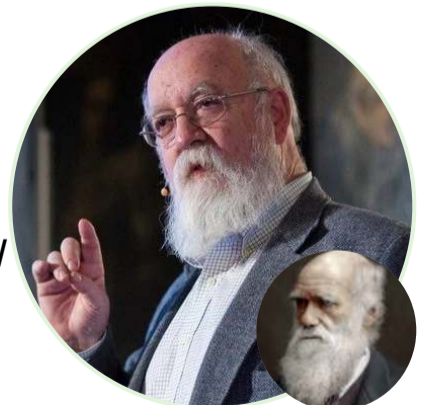
(2022) विज्ञान के बेतुके आधिपत्य पर

स्रोत: onlinephilosophyclub.com

यह दृष्टिकोण इस धारणा को चुनौती देता है कि विज्ञान को मानवीय अनुभव और मूल्यों से पूरी तरह अलग किया जा सकता है। यह सुझाव देता है कि ऐसा करने का प्रयास - एक तरह की शुद्ध वस्तुनिष्ठता का दावा करना - न केवल गुमराह करने वाला है बल्कि संभावित रूप से खतरनाक भी है।

Daniel C. Dennett बनाम Hereandnow

“Hereandnow” और दूसरे यूजर (जो बाद में प्रसिद्ध दार्शनिक Daniel C. Dennett के रूप में सामने आए) के बीच हुई चर्चा इस मुद्दे पर दार्शनिक विचारों में गहरे विभाजन को दर्शाती है। Dennett, जो अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं, गहन दार्शनिक जांच की आवश्यकता को खारिज करते हैं, कहते हैं कि “मुझे उन लोगों में से किसी में भी कोई दिलचस्पी नहीं है। इन सवालों से जूझने वाले दार्शनिकों की सूची प्रस्तुत किए जाने पर (^) बिल्कुल भी नहीं”।



चार्ल्स डार्विन या डेनियल डेनेट?

यह आदान-प्रदान “विज्ञान-विरोधी” आख्यान के मूल में विद्यमान समस्या को उजागर करता है: दार्शनिक जांच को अप्रासंगिक या वैज्ञानिक प्रगति के लिए हानिकारक मानकर खारिज कर दिया जाना।

निष्कर्ष: दार्शनिक जांच की आवश्यकता

विज्ञान विरोधी कथा, जिसमें वैज्ञानिक संदेह के अभियोजन और दमन की मांग की गई है, वैज्ञानिक अधिकार के खतरनाक अतिक्रमण का प्रतिनिधित्व करती है। यह एक अनुमानित अनुभवजन्य निश्चितता में पीछे हटकर वास्तविकता की मौलिक अनिश्चितता से बचने का प्रयास है। हालाँकि, यह निश्चितता भ्रामक है, जो हठधर्मी मान्यताओं पर आधारित है जो दार्शनिक जांच का सामना नहीं कर सकती।

जैसा कि हमारे [यूजीनिक्स](#) पर लेख में गहराई से बताया गया है, विज्ञान जीवन के लिए **मार्गदर्शक सिद्धांत** के रूप में काम नहीं कर सकता है क्योंकि इसमें **मूल्य** और अर्थ के सवालों से निपटने के लिए आवश्यक दार्शनिक और नैतिक आधारों का अभाव है। ऐसा करने का प्रयास यूजीनिक्स जैसी खतरनाक विचारधाराओं को जन्म देता है, जो जीवन की समृद्धि और जटिलता को मात्र जैविक नियतिवाद तक सीमित कर देता है।



- ▶ अध्याय “विज्ञान और नैतिकता से मुक्त होने का प्रयास ने” विज्ञान द्वारा दर्शनशास्त्र से स्वयं को मुक्त करने के लिए सदियों से जारी प्रयास को प्रदर्शित किया।
- ▶ अध्याय “यूनिफॉर्मिटेरियनिज्म: सुजननिक्स के पीछे का सिद्धांत” इस धारणा के अंतर्गत निहित हठधर्मी भ्रांति को उजागर करता है कि वैज्ञानिक तथ्य दर्शन के बिना भी वैध हैं।
- ▶ अध्याय “['विज्ञान जीवन के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत है?' में](#)” यह बताया गया है कि विज्ञान जीवन के लिए **मार्गदर्शक सिद्धांत** के रूप में क्यों काम नहीं कर सकता है।

विज्ञान विरोधी या “*विज्ञान पर युद्ध की*” कहानी वैज्ञानिक अखंडता की रक्षा का प्रतिनिधित्व नहीं करती है, बल्कि विज्ञान के सदियों पुराने संघर्ष को दर्शाती है, जो दर्शनशास्त्र से खुद को मुक्त करने के लिए है, जैसा कि [यूजीनिक्स लेख](#) में गहराई से बताया गया है। “*विज्ञान विरोधी*” पाखंड की घोषणाओं के माध्यम से वैध दार्शनिक और नैतिक जांच को चुप कराने की कोशिश करके, वैज्ञानिक प्रतिष्ठान एक ऐसे अभ्यास में संलग्न है जो मूल रूप से प्रकृति में हठधर्मी है और इसलिए पूछताछ-आधारित उत्पीड़न के बराबर है।

जैसा कि दार्शनिक **David Hume** ने बड़ी चतुराई से कहा है, मूल्य और नैतिकता के प्रश्न मूलतः वैज्ञानिक जांच के दायरे से बाहर हैं:



(2019) विज्ञान और नैतिकता: क्या विज्ञान के तथ्यों से नैतिकता का पता लगाया जा सकता है?

इस मुद्दे को 1740 में दार्शनिक **डेविड ह्यूम** द्वारा सुलझाया जाना चाहिए था: विज्ञान के तथ्य मूल्यों के लिए कोई आधार प्रदान नहीं करते हैं। फिर भी, किसी तरह के आवर्तक मेम की तरह, यह विचार कि विज्ञान सर्वशक्तिमान है और मूल्यों की समस्या को जल्द या बाद में हल करेगा, हर पीढ़ी के साथ पुनर्जीवित होता है।

स्रोत: [Duke University: New Behaviorism](#)

निष्कर्ष में, विज्ञान पर सवाल उठाने वालों पर युद्ध की घोषणा को मौलिक रूप से हठधर्मी माना जाना चाहिए। दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर **Justin B. Biddle** का तर्क सही है कि विज्ञान विरोधी या “*विज्ञान पर युद्ध की*” कहानी दार्शनिक रूप से गुमराह करने वाली और खतरनाक दोनों है। यह कहानी न केवल स्वतंत्र जांच के लिए खतरा है, बल्कि नैतिक वैज्ञानिक अभ्यास और ज्ञान और समझ की व्यापक खोज की नींव के लिए भी खतरा है। यह वैज्ञानिक प्रयासों में दार्शनिक जांच की निरंतर आवश्यकता की एक कठोर याद दिलाता है, विशेष रूप से [यूजीनिक्स](#) और जीएमओ जैसे नैतिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में।

16 दिसंबर 2024 पर मुद्रित



जीएमओ बहस
यूजीनिक्स पर एक आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य

© 2024 Philosophical.Ventures Inc.